**हिंदी विवि के 17 वें स्थापना दिवस पर 31 दिसंबर को छप्पन भोग-फूड फेस्टिवल
विविध प्रांतों के लजीज व्यंजनों का लिया जा सकेगा स्वाद**

वर्धा, 28 दिसंबर, 2014; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ **31 दिसंबर, 2014** को दोपहर 2 से रात्रि 10 बजे तक समता भवन के प्रांगण में फूड फेस्टिवल (छप्पन भोग) का भव्य आयोजन किया जा रहा है। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में फूड फेस्टिवल का उद्घाटन किया जाएगा। फूड फेस्टिवल में देश भर के विभिन्न प्रांतों के लजीज व्यंजनों के स्वाद लिये जा सकते हैं। फेस्टिवल में खास आकर्षण है- वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 183 देशों के करेंसी नोट व सिक्कों की प्रदर्शनी और विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा चटपटी खबरों का स्टॉल।

फेस्टिवल में आप पा सकेंगे देशभर के विभिन्न प्रांतों के लजीज व्यंजनों के स्वाद। महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल, गुजरात सहित कई प्रांतों के व्यंजन कला में शौकीन लोगों द्वारा विविध स्टॉल लगाए जा रहे हैं। तकरीबन 45 स्टॉल में देश-विदेश में प्रचलित खाद्य पदार्थों का स्वाद यहां लिया जा सकता है। यहां सस्ते दरों पर चाय से लेकर चिप्स तक, समोसा, बर्गर, पिज्जा, डोनेट, बंगाली रसगुल्ला, पूण पोळी, दाबेली, पनीर जंगली, छोले टिक्की, पुलाव, पावभाजी, चाउमिन, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, मटका रोटी, सैंडविच, नूडल्स, मंचूरियन, सेवाग्राम वडा, शेगांव कचोड़ी, रबड़ी, फलूदा, स्वीटकोर्न, चटपटे चाट आदि और खाना की पूरी थाली-वेज और नॉन वेज दोनों ही प्राप्त कर सकते हैं। फूड फेस्टिवल में लाजवाब व्यंजन बनाने वाले प्रथम तीन स्टॉल धारकों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

फूड फेस्टिवल के संयोजक डॉ.अमित विश्वास ने बताया कि कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र और प्रतिकुलपति प्रो.चित्तरंजन मिश्र की अभिप्रेरणा से फूड फेस्टिवल (छप्पन भोग) का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर फूड फेस्टिवल का यह चौथा आयोजन है जो कि सांस्कृतिक एकता और सौहार्द का परिचायक है। विविधता भारतीय संस्कृति की पहचान है। यहां भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी, खान-पान की संस्कृति वाले लोग रहते हैं। आज हम चारों भाषा, नस्ल, संप्रदाय के नाम पर विवाद खड़े करते हैं पर स्वाद के नाम पर कभी भी लड़ाई होते नहीं देखी है। उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र की पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। हम जानते हैं कि क्या कभी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा हुआ हो? क्या कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने कहा है कि हम अपने राज्य में पड़ोसी राज्य का फलां व्यंजन नहीं बिकने देंगे, क्योंकि इससे लोग अपने राज्य का व्यंजन खाना छोड़ देंगे? कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है? एक इतालवी महिला को बेशक हम अपने देश पर राज न करने दें लेकिन इतालवी पिज्जे का हम दिल खोलकर स्वागत करते हैं। चीन की नीतियां हमें न सुहाती हों लेकिन चाइनीज़ चाउमिन से हमें दोस्ती है। अमेरिकी साम्राज्यवाद को चाहे कितने भी कोंसे लेकिन अमेरिकी बर्गर के स्वाद को हम भूल नहीं पाते हैं। तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो दूसरा पायदान बेशक स्वाद ही है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव संजय गवई ने वर्धावासियों से इस फूड फेस्टिवल का आनंद उठाने की अपील की है।

हिंदी विश्वविद्यालय में आज फूड फेस्टिवल : छप्पन भोग

विविध प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों का लिया जा सकेगा स्वाद

वर्धा, 28 दिसंबर, 2014; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर 31 दिसंबर, 2014 को आयोजित फूड फेस्टिवल : छप्पन भोग का उदघाटन कुलपति गिरीश्वर मिश्र करेंगे।

आवासीय लेखक एवं संपादक : हिंदीसमयडॉटकॉम प्रो.अरुणेश नीरन सामासिक संस्कृति और भारतीय व्यंजन विषय पर व्याख्यान देंगे। प्रतिकुलपति प्रो.चित्तरंजन मिश्र संबोधित करेंगे।

(विषय :) विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ **31 दिसंबर, 2014** को दोपहर 2 से रात्रि 10 बजे तक समता भवन के प्रांगण में फूड फेस्टिवल (छप्पन भोग) का भव्य आयोजन किया जा रहा है। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में फूड फेस्टिवल का उद्घाटन किया जाएगा। फूड फेस्टिवल में देश भर के विभिन्न प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों के स्वाद लिये जा सकते हैं। फेस्टिवल में खास आकर्षण है-वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 183 देशों के करेंसी नोट व सिक्कों की प्रदर्शनी और विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा चटपटी खबरों का स्टॉल।

फेस्टिवल में आप पा सकेंगे देशभर के विभिन्न प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों के स्वाद। महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल, गुजरात सहित कई प्रांतों के व्यंजन कला में शौकीन लोगों द्वारा विविध स्टॉल लगाए जा रहे हैं। तकरीबन 45 स्टॉल में देश-विदेश में प्रचलित खाद्य पदार्थों का स्वाद यहां लिया जा सकता है। यहां सस्ते दरों पर चाय से लेकर चिप्स तक, समोसा, बर्गर, पिज्जा, डोनेट, बंगाली रसगुल्ला, पूण पोळी, दाबेली, पनीर जंगली, छोले टिक्की, पुलाव, पावभाजी, चाउमिन, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, मटका रोटी, सैंडविच, नूडल्स, मंचूरियन, सेवाग्राम वडा, शेगांव कचोड़ी, रबड़ी, फलूदा, स्वीटकोर्न, चटपटे चाट आदि और खाना की पूरी थाली-वेज और नॉन वेज दोनों ही प्राप्त कर सकते हैं। फूड फेस्टिवल में लाजवाब व्यंजन बनाने वाले प्रथम तीन स्टॉल धारकों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

फूड फेस्टिवल के संयोजक डॉ.अमित विश्वास ने बताया कि कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र और प्रतिकुलपति प्रो.चित्तरंजन मिश्र की अभिप्रेरणा से फूड फेस्टिवल (छप्पन भोग) का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर फूड फेस्टिवल का यह चौथा आयोजन है जो कि सांस्कृतिक एकता और सौहार्द का परिचायक है। विविधता भारतीय संस्कृति की पहचान है। यहां भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी, खान-पान की संस्कृति वाले लोग रहते हैं। आज हम चाहें भाषा, नस्ल, संप्रदाय के नाम पर विवाद खड़े करते हों पर स्वाद के नाम पर कभी भी लड़ाई होते नहीं देखी है। उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र की पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। हम जानते हैं कि क्या कभी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा हुआ हो? क्या कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने कहा है कि हम अपने राज्य में पड़ोसी राज्य का फलां व्यंजन नहीं बिकने देंगे, क्योंकि इससे लोग अपने राज्य का व्यंजन खाना छोड़ देंगे? कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है? एक इतालवी महिला को बेशक हम अपने देश पर राज न करने दें लेकिन इतालवी पिज्जे का हम दिल खोलकर स्वागत करते हैं। चीन की नीतियां हमें न सुहाती हों लेकिन चाइनीज़ चाउमिन से हमें दोस्ती है। अमेरिकी साम्राज्यवाद को चाहे कितने भी कोंसे लेकिन अमेरिकी बर्गर के स्वाद को हम भूल नहीं पाते हैं। तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो दूसरा पायदान बेशक स्वाद ही है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव संजय गवई ने वर्धावासियों से इस फूड फेस्टिवल का आनंद उठाने की अपील की है।

हिंदी विवि के फूड फेस्टीवल में विभिन्न प्रांतों के लजीज व्यंजनों के स्वाद

वर्धा, 16 दिसंबर, 2013;

फेस्टीवल के संदर्भ में कुलपति विभूति नारायण राय से पूछने पर उन्होंने बताया कि पहले हमलोग पारंपरिक रूप से स्थानीय केटर से खाना खिलवा देते थे। मुनाफा एक व्यापारी को होता था। गत वर्ष से स्थापना दिवस के अवसर पर फूड फेस्टीवल का आयोजन किया जा रहा है, इससे लोगों को विभिन्न प्रकार के लजीज व्यंजनों के स्वाद तो मिलेंगे ही और मुनाफा कई लोगों को मिल सकेगा।

गौरतलब है कि उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र की पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। हम जानते हैं कि क्या कभी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा हुआ हो? क्या कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने कहा है कि हम अपने राज्य में पड़ोसी राज्य का फलां व्यंजन नहीं बिकने देंगे, क्योंकि इससे लोग अपने राज्य का व्यंजन खाना छोड़ देंगे? कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है? एक इतालवी महिला को बेशक हम अपने देश पर राज न करने दें लेकिन इतालवी पिज्जे का हम दिल खोलकर स्वागत करते हैं। चीन की नीतियां हमें न सुहाता हो लेकिन चाइनीज चाउमिन से हमें दोस्ती है। अमेरिकी साम्राज्यवाद को चाहे कितने भी कोंसे लेकिन अमेरिकी बर्गर के स्वाद को हम भूल नहीं पाते हैं। तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो अगला पायदान यकीनन स्वाद ही है।

फूड फेस्टीवल में लाजवाब व्यंजन बनाने वाले स्टॉलधारकों को पुरस्कृत किया जाएगा। उत्तम गलवा, वर्धा ने पुरस्कार राशि प्रायोजित किया है। फूड फेस्टीवल के संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए विश्वविद्यालय के सहायक संपादक डॉ.अमित विश्वास (संयोजक : फूड फेस्टीवल) मो.9970244359 से संपर्क किया जा सकता है। कुलसचिव डॉ.कैलाश खामरे ने वर्धा के लोगों से फूड फेस्टीवल का आनंद उठाने का आह्वान किया है।

(डॉ. अमित विश्वास)

आज हिंदी विवि में फूड फेस्टीवल का भव्य आयोजन
विधायक सुरेश देशमुख करेंगे उद्घाटन

वर्धा, 30 दिसंबर, 2013; 31 दिसंबर को कहीं घूमने के लिए जाना चाहते हैं तो आपके लिए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय सबसे उपयोगी साबित हो सकती है क्योंकि विश्वविद्यालय अपना 16 वॉं स्थापना दिवस समारोह मनाने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ **31 दिसंबर, 2013** को दोपहर 2 से रात्रि 10 बजे तक समता भवन के प्रांगण में फूड फेस्टीवल का आयोजन किया जा रहा है। कुलपति विभूति नारायण राय की अध्यक्षता में आयोजित फूड फेस्टीवल का उद्घाटन दोपहर 03 बजे वर्धा के विधायक सुरेश देशमुख के हाथों किया जाएगा। समारोह में उत्तम गलवा के निदेशक ओम आहुजा बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद रहेंगे।

फेस्टीवल में आप पा सकेंगे देशभर के विभिन्न प्रांतों के लजीज व्यंजनों के स्वाद और चीन सहित अन्य देशों के व्यक्तियों के हाथों से बनाए व्यंजनों के स्वाद। तकरीबन 40 स्टॉल में देश-विदेश में प्रचलित खाद्य पदार्थों का स्वाद यहां लिया जा सकता है। यहां सस्ते दरों पर चाय से लेकर चिप्स तक, समोसा, बर्गर, पिज्जा, डोनेट, मोमो, कॉफी, बंगाली रसगुल्ला, पूण पोळी, हुरडा, दाबेली, पनीर जंगली, छोले टिक्की, श्रीखंड, पुलाव, पावभाजी, चाउमिन, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, मटका रोटी, सैंडविच, नूडल्स, मंचूरियन, सेवाग्राम वडा, शेगांव कचोड़ी, रबड़ी, फलूदा, स्वीटकोर्न, चटपटे चाट आदि और खाना की पूरी थाली- 'वेज' और 'नॉन वेज' दोनों ही प्राप्त कर सकते हैं। फेस्टीवल की खासियत है कि इसमें वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 166 देशों के करेंसी नोट व सिक्कों को देख सकेंगे।

गौरतलब है कि उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र की पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। हम जानते हैं कि क्या कभी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा हुआ हो? क्या कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने कहा है कि हम अपने राज्य में पड़ोसी राज्य का फलां व्यंजन नहीं बिकने देंगे, क्योंकि इससे लोग अपने राज्य का व्यंजन खाना छोड़ देंगे? कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है? एक इतालवी महिला को बेशक हम अपने देश पर राज न करने दें लेकिन इतालवी पिज्जे का हम दिल खोलकर स्वागत करते हैं। चीन की नीतियां हमें न सुहाता हो लेकिन चाइनीज चाउमिन से हमें दोस्ती है। अमेरिकी साम्राज्यवाद को चाहे कितने भी कोंसे लेकिन अमेरिकी बर्गर के स्वाद को हम भूल नहीं पाते हैं। तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो अगला पायदान यकीनन स्वाद ही है।

फूड फेस्टीवल के संयोजक डॉ.अमित विश्वास ने बताया कि सबसे स्वादिष्ट व्यंजन बनाने वाले स्टॉलधारकों को पुरस्कृत किया जाएगा। उत्तम गलवा, वर्धा के सौजन्य से प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार के रूप में क्रमशः चार, तीन, दो और एक हजार रुपये नगद दिए जाएंगे। इस अवसर पर रवीन्द्र कालिया, निर्मला जैन, प्रो.तंकमणि अम्मा, प्रो.दूधनाथ सिंह, प्रो.विनोद कुमार शुक्ल, ऋतुराज, से.रा.यात्री, विजय मोहन सिंह, प्रो. ममता कालिया, प्रो. मनोज कुमार, प्रो.सूज पालीवाल, प्रो.के.के.सिंह, प्रो.अनिल के.राय अंकित, प्रो.वासंती रमण, प्रो.शंभूगुप्त, प्रो.देवराज, प्रो.हनुमान शुक्ल आदि प्रमुखता से उपस्थित रहेंगे। कुलसचिव डॉ.कैलाश खामरे ने वर्धा वासियों से फूड फेस्टीवल का आनंद उठाने का आह्वान किया है।

(डॉ. अमित विश्वास)

विधायक देशमुख ने किया फूड फेस्टिवल का उद्घाटन

विविध प्रांतों के लजीज व्यंजनों के स्वाद से लोग हुए रोमांचित

वर्धा, 02 जनवरी, 2014; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के 16वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित भव्य फूड फेस्टिवल का उद्घाटन वर्धा के विधायक सुरेश देशमुख के हाथों किया गया। समारोह की अध्यक्षता कुलपति विभूति नारायण राय ने की। इस अवसर पर उत्तम गलवा के सीनियर जनरल मैनेजर विवेक भटनागर, ओंकार घोष दोस्तिदार, प्रो.निर्मला जैन, प्रो.तंकमणि अम्मा, प्रो.ममता कालिया, पद्मा राय, कुलसचिव डॉ.के.जी.खामरे, वित्ताधिकारी संजय गवई, स्वाति ताई देशमुख, अपर्णा घोषदोस्तिदार, मीना खामरे, रेणु गुलाटी मंचस्थ थे। कुलपति श्री राय ने विधायक देशमुख और उत्तम गलवा के विवेक भटनागर का स्वागत शाल और चरखा प्रदान कर किया।

उद्घाटन वक्तव्य में सुरेश देशमुख ने कहा कि इस विश्वविद्यालय में आकर बहुत अच्छा लग रहा है, वर्तमान कुलपति ने जो यहां कार्य किया है, वह बहुत ही सराहनीय है। कभी कैंपस वीरान सा दिखता था, आज यह अपने आप में एक अनूठा विश्वविद्यालय के रूप में हम पा रहे हैं। हमसे जो भी मदद हो सकेगा, सदैव करने को तैयार रहेंगे। लोगों ने इच्छा जताई है कि परिसर के पीछे गेट से पंजाब कॉलोनी जोड़ने वाली सड़क का निर्माण कार्य करवा सकें, हम जल्दी ही इसका क्रियान्वयन करेंगे क्योंकि यहां विदेशों से बड़ी संख्या में विद्यार्थी पढ़ने आते हैं, उनके मन में भारत के प्रति कीचड़नुमा सड़क की छवि न बने।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि गत वर्ष से हमलोग फूड फेस्टिवल का आयोजन कर रहे हैं। इसमें विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, कर्मी, महिला बचत समूह से लेकर वर्धा के कई संस्थानों से जुड़े लोगों ने स्टॉल लगाया है, इससे व्यंजन कला में निपुण लोगों द्वारा बनाए लजीज व्यंजनों के स्वाद लिया जा सकेगा। स्वादिष्ट व्यंजन बनाने वाले स्टॉल धारकों को पुरस्कृत करने के लिए उत्तम गलवा ने प्रायोजित किया है, हम उनके आभारी हैं। भविष्य में भी उत्तम गलवा के साथ हमारा संबंध प्रगाढ़ होगा।

समता भवन के प्रांगण में आयोजित फूड फेस्टिवल में देशभर के विभिन्न प्रांतों के लजीज व्यंजनों के स्वाद और चीन सहित अन्य देशों के व्यक्तियों के हाथों से बनाए व्यंजनों के स्वाद लेने के लिए 31 दिसंबर को दोपहर 02 बजे से रात 11 बजे तक लोगों का तांता लगा रहा। लोगों ने 36 स्टॉल में देश-विदेश में प्रचलित खाद्य पदार्थों के स्वाद चखे। यहां सस्ते दरों पर चाय से लेकर चिप्स तक, समोसा, बर्गर, पिज्जा, डोनेट, मोमो, कॉफी, बंगाली रसगुल्ला, पूण पोळी, हुरडा, दाबेली, पनीर जंगली, छोले टिक्की, श्रीखंड, पुलाव, पावभाजी, चाउमिन, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, मटका रोटी, सैंडविच, नूडल्स, मंचूरियन, सेवाग्राम वडा, शेगांव कचोड़ी, रबड़ी, फलूदा, स्वीटकोर्न, चटपटे चाट आदि और खाना की पूरी थाली - 'वेज' और 'नॉन वेज' दोनों ही उपलब्ध थे। फेस्टिवल में खास आकर्षण का केंद्र रहा-वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 166 देशों के करेंसी नोट व सिक्कों की प्रदर्शनी और चीन के लोगों द्वारा स्वादिष्ट व्यंजन बनाया जाना।

इस अवसर पर प्रो.विनोद कुमार शुक्ल, ऋतुराज, से.रा.यात्री, प्रो.मनोज कुमार, प्रो.सूज पालीवाल, प्रो.के.के.सिंह, प्रो.अनिल के.राय अंकित, प्रो.वासंती रमण, प्रो.शंभू गुप्त, प्रो.देवराज, प्रो.हनुमान शुक्ल, अनिर्बाण घोष, बी.एस.मिरगे, फूड फेस्टिवल के संयोजक डॉ.अमित विश्वास, मुरलीधर बेलखोड़े सहित विवि के अध्यापक, कर्मी, विद्यार्थी और वर्धा के नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। अहिंसा एवं शांति अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर राकेश मिश्र ने संचालन किया तथा कुलसचिव डॉ.कैलाश खामरे ने आभार व्यक्त किया।

(डॉ.अमित विश्वास)

विश्वविद्यालय के 17वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित 'फूड फेस्टिवल : छप्पन भोग' के उदघाटक माननीय कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र जी, प्रतिकुलपति प्रो.चित्तरंजन मिश्र जी, विशिष्ट अतिथि प्रो.अरुणेश नीरन जी एवं मित्रो,

माननीय कुलपति और प्रतिकुलपति की अभिप्रेरणा से छप्पन भोग का भव्य आयोजन किया गया है। विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर फूड फेस्टिवल का यह चौथा आयोजन है जो कि सांस्कृतिक एकता और सौहार्द का परिचायक है। विश्वविद्यालय में विविध प्रांतों के विद्यार्थी और कर्मी हैं, मिनी भारत की संस्कृति आपको देखने को मिलेगी।

आज चाहे हम ग्लोबल विलेज की बात करते हों, कहते हैं कि दुनिया सिमटती जा रही है पर क्या यह सच नहीं है कि आज लोगों के बीच की दूरियां बढ़ती जा रही हैं, इसे पाटने का एक प्रयास के रूप में इसे लिया जा सकता है। आज हम चाहें भाषा, नस्ल, संप्रदाय के नाम पर विवाद खड़े करते हों पर स्वाद के नाम पर कभी भी लड़ाई होते नहीं देखी। उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र का पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। हम जानते हैं कि क्या कभी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा हुआ हो? क्या कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने कहा है कि हम अपने राज्य में पड़ोसी राज्य का फलां व्यंजन नहीं बिकने देंगे, क्योंकि इससे लोग अपने राज्य का व्यंजन खाना छोड़ देंगे? कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है? एक इतालवी महिला को बेशक हम अपने देश पर राज न करने दें लेकिन इतालवी पिज्जे का हम दिल खोलकर स्वागत करते हैं। चीन की नीतियां हमें न सुहाती हों लेकिन चाइनीज़ चाउमिन से हमें दोस्ती है। अमेरिकी साम्राज्यवाद को चाहे कितने भी कोंसे लेकिन अमेरिकी बर्गर के स्वाद को हम भूल नहीं पाते हैं। तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो दूसरा पायदान बेशक स्वाद ही है।

मित्रों, इसमें देश भर के विभिन्न प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों के स्वाद लिये जा सकते हैं। यहां के विद्यार्थियों, कर्मियों और शहर के व्यंजन कला के शौकीन लोगों द्वारा 45 स्टॉल लगाये गए हैं। फेस्टिवल में खास आकर्षण है-वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 183 देशों के करेंसी नोट व सिक्कों की प्रदर्शनी, नारायण राव देशमुख व राहुल वकारे द्वारा प्रदर्शित प्राचीन मुद्राओं की प्रदर्शनी और विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा चटपटी खबरों का स्टॉल। आप लोग स्वाद का आनंद लीजिये, आप सब यहां आए हैं, आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

हिंदी विवि में आज खाना खज़ाना : फूड फेस्टिवल का भव्य आयोजन

सांसद रामदास तडस करेंगे उद्घाटन

फेस्टिवल में विविध प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों का लिया जा सकेगा स्वाद

वर्धा, 30 दिसंबर, 2016; महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 19 वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ आज (31 दिसंबर, 2016) को दोपहर 2 से रात्रि 10 बजे तक समता भवन के प्रांगण में खाना खज़ाना : फूड फेस्टिवल का भव्य आयोजन किया जा रहा है। फेस्टिवल का उद्घाटन वर्धा के सांसद श्री रामदास तडस द्वारा किया जाएगा और विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र अध्यक्षता करेंगे।

फूड फेस्टिवल में देश भर के विभिन्न प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों के स्वाद लिये जा सकते हैं। फेस्टिवल में खास आकर्षण है-वर्धा के एच.एन.घोष द्वारा संग्रहित 197 देशों की करेंसी नोट व सिक्कों की प्रदर्शनी, नारायण देशमुख द्वारा चौथी ई. पूर्व की मुद्राएं तथा बहुमूल्यवस्तुओं का संग्रह, राजेंद्र भोयर द्वारा मुगलकालीन ऐतिहासिक सातवाहन काल से मुगलकालीन सिक्के व मुद्राओं का प्रदर्शन।

फेस्टिवल में आप पा सकेंगे देशभर के विभिन्न प्रांतों के लजीज़ व्यंजनों के स्वाद। महाराष्ट्र, बिहार, बंगाल, गुजरात सहित कई प्रांतों के व्यंजन कला में शौकीन लोगों द्वारा विविध स्टॉल लगाए जा रहे हैं। करीब 50 स्टॉल में देश-विदेश में प्रचलित खाद्य पदार्थों का स्वाद यहां लिया जा सकता है। यहां सस्ते दरों पर चाय से लेकर चिप्स तक, बर्गर, पिज्जा, डोनेट, बंगाली रसगुल्ला, पूरण पोळी, दाबेली, पनीर जंगली, छोले टिक्की, पुलाव, पावभाजी, चाउमिन, सेवई, लिट्टी चोखा, आलू पराठा, गाजर हलवा, सैंडविच, नूडल्स, मंचूरियन, शेगांव कचोड़ी, रबड़ी, फलूदा, स्वीटकोर्न, चटपटे चाट आदि और खाना की पूरी थाली-वेज और नॉन वेज दोनों ही प्राप्त कर सकते हैं। फूड फेस्टिवल में लाजवाब व्यंजन बनाने वाले प्रथम तीन स्टॉल धारकों को प्रोत्साहन स्वरूप प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

फूड फेस्टिवल के संयोजक डॉ.अमित विश्वास ने बताया कि विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर फूड फेस्टिवल का यह पांचवां आयोजन है जो कि सांस्कृतिक एकता और सौहार्द का परिचायक है। कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र और प्रतिकुलपति प्रो.आनंद वर्धन शर्मा की अभिप्रेरणा से खाना खज़ाना : फूड फेस्टिवल का आयोजन किया जा रहा है। कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने खाना खज़ाना : फूड फेस्टिवल का आनंद उठाने की अपील की है।

फूड फेस्टिवल के संदर्भ में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र से पूछने पर उन्होंने बताया कि विविधता भारतीय संस्कृति की पहचान है। यहां भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी, खान-पान की संस्कृति वाले लोग रहते हैं। आज हम चाहे भाषा, नस्ल, संप्रदाय के नाम पर विवाद खड़े करते हों पर स्वाद के नाम पर कभी भी लड़ाई होते नहीं देखी है। उत्तर का समोसा और दक्षिण का डोसा, गुजरात का ढोकला, महाराष्ट्र की पावभाजी और बंगाली रसगुल्ला बहुत से लोगों के बीच लोकप्रिय है। हम जानते हैं कि क्या कभी दो राज्यों में किसी चीज के स्वाद को लेकर झगड़ा हुआ हो? क्या कभी किसी राजनीतिक पार्टी ने कहा है कि हम अपने राज्य में पड़ोसी राज्य का फलां व्यंजन नहीं बिकने देंगे, क्योंकि इससे लोग अपने राज्य का व्यंजन खाना छोड़ देंगे? कभी किसी नेता को समोसे या डोसे का बहिष्कार करने का आह्वान करते सुना है? एक इतालवी महिला को बेशक हम अपने देश पर राज न करने दें लेकिन इतालवी पिज्जे का हम दिल खोलकर स्वागत करते हैं। चीन की नीतियां हमें न सुहाती हों लेकिन चाइनीज़ चाउमिन से हमें दोस्ती है। अमेरिकी साम्राज्यवाद को चाहे कितने भी कोंसे लेकिन अमेरिकी बर्गर के स्वाद को हम भूल नहीं पाते हैं। तात्पर्य है कि स्वाद सार्वभौमिक है। अगर भूख हमारे कर्म का पहला पायदान है तो दूसरा पायदान बेशक स्वाद ही है।